।। ग्रीखम रुत (वैसाख-जेठ) ।।

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी ग्रीखम, अमृत रस लावी रे फल उत्तम।
वन फल पाकीने थया रे नरम, वाला तमे एणे समे न आवो केम।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! गर्मी की ऋतु आई है। आम और दूसरे फलों में रस भर गया है। वन फल पककर नरम हो गए हैं। हे वालाजी! इस समय आप क्यों नहीं आते। मैं पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला मारा त्रट जमुनाना वृंदावन, हांरे टाढी छांहेडी तले रे कदम।
पिउजी इहां देता रे पावलिए पदम, ते अमे विलखूं छूं वालाने वदन।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे धनी! वृन्दावन में यमुनाजी के किनारे पर कदम्ब के पेड़ की ठण्डी छाया में आपके चरण कमल पड़ते थे। आपके इस रूप को यादकर बिलखती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वैसाख फूल्यो रे वेलडिए वेहेकार, भमरा मदया करे रे गुंजार।
पंखीडा अनेक कला रे अपार, वाला वन विलस्या तणी आवार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! वैसाख (वैशाख) महीने में बेलों में खिले फूल सुगन्ध बिखेर रहे हैं। भंवरे मस्ती में गूंज रहे हैं। पक्षी अनेक तरह से अपार कला दिखा रहे हैं। हे वालाजी! वन में विलास करने का यही सुन्दर समय है और मैं पिया-पिया पुकारती हूं।

वाला रवि तपेरे अंबरियो निरमल, पिउजी कारण वास्या जल रे सीतल।
वदन देखाडो रे वालैया सकोमल, पिउजी अमे पंथडो निहालूं पल पल।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

वालाजी! निर्मल आकाश में सूर्य तप रहा है। आपके लिए हमने ठण्डा जल रखा है। ऐसे समय में आकर अपने सुन्दर स्वरूप के दर्शन दो। जिसे देखने के लिए पल-पल मैं आपकी राह देखती हूं और पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला वनमां मेवो रे महिनो जेठ सार, एणे समे आवो रे नंदना कुमार।
पिउजी तमे सदा रे सुखना दातार, वृज वधु विलखती पाडे रे पुकार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! जेठ महीने में वन में फलों और मेवों की बहार है। इस समय, हे नन्द के लाल! आओ, तुम सदा सुख के देने वाले हो। हम ब्रज की गोपियां रो-रोकर पुकारती हैं और पिया-पिया पुकार रही हैं।

सखियो तारा सुखडा संभारी ने रुए, हवे अम विजोगणियों ने कोण आवी जुए।
पिउजी विना आंसूडा ते कोण आवी लुए, वाला पछे आवसोसूं अममुए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! आपके सुखों को याद करके हम रोती हैं। अब हम विरहणियों की हालत कौन देखेगा? हे प्रीतम! आपके विना हमारे आंसू कौन पोंछेगा? हे मेरे वालाजी! क्या आप हमारे मरने के बाद आओगे? मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३० ।।